Health/ स्वास्थ्य

मानव शरीर एक जटिल रचना है, इसमें अनेकों प्रकार के रोग आते रहते हैं। उनके उपचार के लिए पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली (allopathy), समाचिकित्सा प्रणाली (homeopathy), प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली (naturopathy) आदि हैं। परन्तु ज्योतिषीय चिकित्सा प्रणाली (astropathy) रोगों के आने से पहले ही आपको सूचित कर देती है और उनसे बचने के सरल और सस्ते उपाय भी बता देती है, जिनका कोई दुष्प्रभाव (side effect) नही होता। ज्योतिषीय चिकित्सा प्रणाली (astropathy) आपको बताती है कि शारीरिक समस्या कब आएगी? कौन से अंग को प्रभावित करेगी और कब तक प्रभावित करेगी? और उसका उपचार व्रत, मंत्रजप, दान, रत्न आदि से किस प्रकार किया जा सकता है और किस प्रकार का उपाय आपको जल्दी से जल्दी स्वस्थ करेगा जोकि पूरी तरह से सुरक्षित, सस्ता, और प्रभावकारी (safe, economical & effective) है।

ज्योतिष शास्त्र द्वारा आपको बताया जा सकता है कि आपके जीवन काल में विभिन्न समयों पर किस प्रकार के रोगों और बीमारियों की संभावना है । कोई भी समझदार व्यक्ति इस जानकारी के बाद अपनी दिनचर्या, विचारशैली, खान-पान व कार्यकलाप में समुचित परिवर्तन कर अपने स्वास्थ्य के ऊपर होने वाले दुष्प्रभावों को समाप्त या न्यूनतम कर सकता है। अपनी दिनचर्या में उचित योगआसन, व्यायाम आदि भी सम्मिलित कर लाभ उठा सकता है, साथ ही ऐसे ज्योतिष द्वारा निर्देशित समयों पर उचित उपाय (जप, रत्न, यंत्र, मंत्र, दान, व्रत आदि) कर दुष्प्रभावों से बच सकता है।
रोगी होने से अच्छा है कि पहले ही उपचार कर लिया जाए या फिर पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली (allopathy) उपचार के साथ - साथ फलित ज्योतिष की दृष्टि से (astrologically) भी उपचार कर लिया जाए जिनका आपस में कोई दुष्प्रभाव (side effect) नही है। दो अलग-अलग प्रणालियों से एक साथ इलाज करने से रोगी के जल्दी ठीक होने की संभावना भी अधिक बढ़ जाती है। जिस प्रकार मौसम बदलते हैं और हम उसके प्रभाव में आ जाते हैं। जैसे सर्दी, गर्मी, बरसात आदि का सीधा असर हमारे शरीर पर पड़ता है, पर रोगी होने की संभावना उस समय अधिक बढ़ जाती है जब एक मौसम समाप्त और दूसरा मौसम शुरू होने वाला होता है। ठीक इसी प्रकार से जब किसी एक ग्रह की दशा या गोचर आदि समाप्त होता है और दूसरे ग्रह की दशा या गोचर आदि आरम्भ होता है तो उसी समय (जिसे **संधि काल** भी कहते हैं) मनुष्य के रोगी होने की संभावना भी बढ़ जाती है। उस समय की गणना हम ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से पता लगा सकते हैं और उसका यथोचित उपचार करके

उसके नकारात्मक प्रभाव को समाप्त या कम कर सकते हैं। इसीलिए हमारे परिवार के बुजुर्ग लोग सुबह और शाम को पूजा करने पर बहुत जोर देते हैं, ताकि संधि काल में होने वाले नकारात्मक प्रभाव को समाप्त या क्षीण किया जा सके और सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाया जा सके।

जन्म के समय कुछ विशेष संधियां जैसेः- भाव संधि, नक्षत्र संधि, लग्न संधि, मूल या गण्ड मूल संधि आदि अपना-अपना विशेष प्रभाव बालक के स्वास्थ्य पर डालती हैं। अनेकों भारतीय त्यौहार भी एक ऋतु के समाप्त होने और दूसरी ऋतु के आरम्भ होने पर बनाए जाते हैं। जैसेः- दशहरा, दिवाली, वंसत पंचमी, होली, बैशाखी आदि। यहां अधिकतर त्यौहार चन्द्रमा के भ्रमण से निर्धारित होते हैं, क्योंकि ज्योतिष शास्त्र में जीवन काल (longivity of life) की गणना चन्द्रमा से की जाती है।

हमारे शरीर का प्रत्येक भाग किसी न किसी ग्रह, नक्षत्र, राशि आदि से प्रभावित है या उनके द्वारा संचालित है, जैसे हमारी आंखें सूर्य ग्रह के द्वारा संचालित होती हैं। सूर्य के प्रकाश के बिना हम देख ही नही सकते (जैसे रात्रि के समय) इसका अर्थ है, कि आंखों का संचालन सूर्य ग्रह के द्वारा किया जाता है। चन्द्रमा के द्वारा मन का संचालन होता है, जिस प्रकार चन्द्रमा रोज अपनी कलाऐं (बड़ा होना या छोटा होना) तेजी से बदलता है, उसी प्रकार मन मे विचारों का आना-जाना भी तेजी से होता रहता है।

इससे यह स्पष्ट है कि जिनकी कुण्डली में सूर्य ग्रह की अवस्था ठीक होगी तो उनको आंखों से संबंधित रोग नही होंगे या कम होंगे और अगर हो भी गए तो जल्दी ठीक हो जाएंगे। इसी प्रकार जन्म पत्रिका में यदि चन्द्रमा निर्बल (weak) होगा तो व्यक्ति का मनोबल भी कमजोर होगा । यहां ज्योतिष शास्त्र हमे यह बताना चाहता है कि ग्रह हमारे रोगों और दुर्भाग्य का कारण नही होते। वे सभी तो केवल हमारे द्वारा पूर्व जन्मों में किए गये **कर्म फलों के सूचक मात्र हैं ।** ग्रह खराब नही होते, खराब तो हमारे कर्म होते हैं। सभी ग्रह न्यायाधीश की तरह हैं और सुधार के लिए भी बताते हैं। जिस प्रकार सड़क पर अनेकों प्रकार के दिशा सूचक होतें हैं, ताकि हम सुरक्षित अपने गंतव्य स्थान पर पहुंच जाऐं, ठीक इसी प्रकार से **जन्मपत्रिका भी जीवन मार्ग का एक नक्शा है और ग्रह एक सूचक का कार्य करते हैं, वे आपके रोगों का कारण नही हैं।** सूचक होने के साथ-साथ वे आपको रोगों को समाप्त या उनका प्रभाव कम करने के लिए उपचार (जैसे मंत्र, जप, रत्न, यंत्र, दान, व्रत आदि) भी बताकर आप पर कृपा भी करते हैं।
सभी ग्रह, भाव और राशियां किसी न किसी रोग और शरीर के भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो निम्न प्रकार से हैंः-

सूर्य से सम्बन्धित रोगः-

हृदयरोग, हड्डियों की बीमारी, सूखा रोग, बहुत तेज बुखार, आंखों से सम्बंधित रोग, पित्त रोग, उदर रोग, जलन, चर्मरोग, मिर्गी आदि।

चन्द्रमा से सम्बंधित रोगः-

वात-कफ विकार, खांसी, फेफड़ों के रोग, क्षयरोग, चक्कर आना, जलघात, चिन्ता, याद रखने की शक्ति क्षीण होना, निद्रा रोग, दमा, खांसी-जुकाम, गुर्दे की बीमारी, कफ, पीलिया आदि।

मंगल ग्रह से सम्बंधित रोगः-

रक्त की बीमारियां, चर्म रोग (दाग, खाज, खुजली, फोड़ा, फुंसी आदि), हड्डी का टूटना, बवासीर, घाव होना, पित्त विकार, जलना या जलन, सिर दर्द, शस्त्रघात, रक्त चाप, महिलाओं के गुप्त रोग, गांठ, हर्निया, बहुत अधिक प्यास लगना आदि।

बुध ग्रह से सम्बंधित रोगः-

(वात-पित्त-कफ), मानसिक रोग, पागलपन, मिर्गी, जीभ सम्बंधित रोग, उल्टी, नपुंसकता, मूर्छा, मनोरोग, टायफाईड, पागलपन, मुख व वाणी के रोग आदि।

बृहस्पति ग्रह से सम्बंधित रोगः-

(कफ-पित्त), मोटापा, उदर विकार, गठिया बाय, चर्बी का बढ़ना, मधुमेह, पीलिया रोग, गुर्दे के रोग, बदहजमी आदि।

शुक्र ग्रह से सम्बंधित रोगः-

(कफ-वात), वीर्य से सम्बंधित रोग, कुंठित बुद्धि, गला, यौन रोग, नपुंसकता, बुखार, शरीर का सूखना आदि।

शनि ग्रह से सम्बंधित रोगः-

(वात-कफ), वायु से सम्बन्धित रोग, पेट दर्द, ऑपरेशन का बार-बार होना, विषबाधा, अंगभंग होना, कर्कश वाणी, तीव्र पीड़ा देने वाले रोग, गठिया, उदरपीड़ा, गंजापन, मांसपेशियों का दर्द, नासूर आदि।

राहु ग्रह से सम्बंधित रोगः-

हैजा, कुष्ठ रोग, मिर्गी, रीड़ की हड्डी की बीमारी, कैंसर रोग, फेफड़ों के रोग, तिल्ली का बढ़ना आदि।

केतु से सम्बंधित रोगः-

कफ, खांसी, खुजली, रक्त विकार, बवासीर, फेफड़ों के रोग, बुखार, बदन में दर्द आदि।

जन्म पत्रिका के बारह भावों या घरों से देखे जाने वाले रोग और शरीर के अंग (भाग)

प्रथम भाव (लग्न)

आयु, दिमाग, मन की शक्ति, सिर, केश, तीनो प्रकार की तंत्रिकाएं (sensery nerves, motor nerves, mixed nerves), जूं या रूसी, सिर की बीमारियां, मूर्छा, आधे सिर का दर्द (migraine) आदि ।

दूसरा भाव

वाणी, आंख (दाहिनी), दांत, मुखमण्डल, जीभ, नाक, नाक की हड्डी, अन्धापन, पायरिया, गले की सभी बीमारियां आदि।

तीसरा भाव

सांस की नली, कंधा (दाहिना), भुजा (दाहिनी), कान (दाहिना), गर्दन, फेफड़ों की बीमारियां (lungs disease), गला आदि।

चौथा भाव

फेफड़े, हृदय (उपरी भाग), रक्तवाहिनी, भोजन नली, झिल्ली (पेट के उपरी भाग को अलग करने वाली), पसली, छाती, रक्त नलिकाएं (arteries, veins, capillaries) आदि ।

पांचवां भाव

गर्भ, पेट, हृदय (निचला भाग), पाचन तंत्र, छोटी आंत, अमाशय, जिगर, तिल्ली, पित्त की थैली, पीलिया, डायबिटीज, पीठ आदि।

छठा भाव

रोग, घाव, अन्तड़ियां, बड़ी आंत, गुर्दा (kidney), दुर्घटना, गिल्टी, कमर दर्द, उपान्त्र (appendix) का खिसकना, हर्निया, नाभि, दायां पांव आदि।

सप्तम भाव

काम वासना, वीर्यमार्ग, मूत्रेन्द्रिय भाग, मूत्र थैली, गर्भाशय, गुर्दे में पथरी, यौन रोग, एड्स, कमर, गुदा आदि।

अष्टम भाव

निधन (death), आयु, गम्भीर बीमारी, महाकष्ट, नशा, मेरूदंड के नीचे का भाग, योनि, लिंग, गुदा, अंडकोष, मृत्यु के समान कष्ट, बायां पांव आदि।

नवम भाव

कूल्हे, जंघा, अस्थि, मांसपेशियां, नितंब या जंघा की अस्थि भाग, जंघा की मांसपेसियों का कमजोर होना, पेट, पीठ आदि।

दशम भाव

घुटने, मांसपेशियां, घुटनों का दर्द, सूजन, गठिया, हृदय, छाती, आदि।

ग्यारहवां भाव

टांगों का निचला भाग, चोट, टखने का जोड, पिंडलियां, बांया कान, मोच, ऐंठन, जकडन, गला, बांया हाथ, बांया कंधा आदि।

बारहवां भाव

बांयी आंख, नींद, पांव की उंगलियां, नाखून, पांव का तला, पांव की सूजन, पीलिया आदि।

अधिकतर देखा गया है कि शनि या मंगल या दोनों ही एक साथ जिस भाव पर बैठें हों तो उस भाव सम्बन्धित शारीरिक भाग या रोग से (अपनी दशा और गोचर के आने पर) पूरी तरह से प्रभावित करते हैं या कष्ट पहुंचाते हैं। इसके विपरीत बृहस्पति या शुक्र या दोनों ही एक साथ जन्म पत्रिका के जिस भाव में बैठें हों, उस भाव सम्बन्धित रोग से (अपनी दशा और गोचर के आने पर) मुक्ति दिलाते हैं। यहां पर हम ग्रहों से सम्बन्धित उपचारों (व्रत, दान, मंत्र-जप, पूजा-पाठ, रत्न आदि) का प्रयोग करके उनके नकारात्मक प्रभाव को कम और सकारात्मक प्रभाव को अधिक से अधिक बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं।

जातक का स्वास्थ्य कैसा रहेगा, यह अधिकतर लग्न से ही पता चल जाता है । लग्न के साथ यदि पाप ग्रहों (गुरू की दृष्टि को हमेशा अमृत वर्षा माना गया है) का सम्बन्ध अधिक है तो स्वास्थ्य अधिकतर ठीक नही रहेगा। यदि शुभ ग्रहों का सम्बन्ध हो तो स्वास्थ्य अधिकतर ठीक रहेगा और यदि जातक अस्वस्थ भी हुआ तो जल्दी ठीक हो जाता है।

कुण्डली के प्रथम भाव को ही लग्न कहते हैं। लग्न में अलग-अलग तत्वों की राशियां हों तो उनका प्रभाव जातक के स्वास्थ्य पर निम्न प्रकार से पड़ता है।

अग्नितत्व की राशियां (मेष, सिहं, धनु) जातक को निरोगी बनाने में सहायक होती हैं।

भूमितत्व की राशियां (वृष, कन्या, मकर) जातक के रोगी होने पर उसे जल्दी ठीक करने में सहायक होती हैं।

वायुतत्व की राशियां (मिथुन, तुला, कुम्भ) जातक में रोगों से लडने की शक्ति को कम करती है।

जलतत्व की राशियां (कर्क, वृश्चिक, मीन) जातक को अनेकों प्रकार के रोग देती हैं।

आज से हजारों साल पहले जब पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली (allopathy) आदि नही थी, उस समय हमारे ऋषि मुनि **ज्योतिष शास्त्र के उपचार** (astropathy), **आयुर्वेद, योगा** आदि को प्रयोग में लाते थे और लम्बी और स्वस्थ आयु प्राप्त करते थे।
जिस प्रकार किसी पौधे के उपर छाया रहे और धूप उचित मात्रा में प्राप्त न हो तो वह पौधा ठीक से विकसित और फल-फूल नही सकता उसी प्रकार से हमारे शरीर के जितने अंगो पर पापी ग्रहों की छाया दृष्टि आदि पड़ती है या उनके प्रभाव में आ जाते हैं, तो शरीर के उन भागों में कष्ट होने की सम्भावना भी अधिक बढ़ जाती है।

काल पुरूष के अनुसार 12 राशियों को मनुष्य के शरीर में दर्शाया गया है। जिन राशियों में पाप ग्रहों की युति या योग बनते हैं वह शारीरिक अंग ज्यादा पीड़ित होता है पर जहां शुभ ग्रहों का सम्बन्ध होता है वह शारीरिक अंग अधिक शक्तिशाली और स्वस्थ होता है।

12 राशियों के अनुसार मानव शरीर का काल पुरूष में वर्गीकरण।

मेष राशि (अग्नि तत्व), ऊर्जा, बल, रोग प्रतिरोधक, सिर, माथा, भौंह, मस्तिष्क आदि।

वृष राशि (पृथ्वी तत्व), धैर्यवान, चेहरा, आंख, नाक, कान, कपोल, होंठ, जबड़ा, मुख, जिह्वा, गला आदि।

मिथुन राशि (वायु तत्व), गर्दन, कंधा, कान, वक्षस्थल, हंसली की हड्डी (collar bone), फेफड़े, श्वांस नली आदि।

कर्क राशि (जल तत्व), छाती, पसली की हड्डियां (ribs), स्तन, गर्दन व उदर का भाग, हृदय, उपरी आमाश्य आदि।

सिंह राशि (अग्नि तत्व), पेट, उदर (निचला), छोटी आंतें/बडी आंतें, गुर्दा, नाभि (navel) आदि।

कन्या राशि (पृथ्वी तत्व), कमर, नाभि, नितम्ब, नाभि से नीचे के अंग आदि।

तुला राशि (वायु तत्व), पेंडू, प्रजनन अंग, मूत्र नलिका (ureter), किडनी, मूत्राशय (bladder), गर्भाशय आदि।

वृश्चिक राशि (जल तत्व), प्रजनन अंग, लिंग, गुदा, अंडकोष, कूल्हे की हड्डी आदि।

धनु राशि (अग्नि तत्व), जंघा, जंघा की अस्थि आदि।

मकर राशि (पृथ्वी तत्व), घुटने, घुटने के जोड, अस्थि आदि।

कुम्भ राशि (वायु तत्व), घुटनो से टखने तक की टांगें, अस्थि, मज्जा, पिंडलियां आदि।

मीन राशि (जल तत्व), पांव, ऐड़ी से पंजे तक का भाग, पांव की उंगुलियां, नाखून आदि।

यदि आपकी कुण्डली के अनुसार कोई दुर्घटना या किसी रोग की संभावना है जिसकी जानकारी आपको पहले ही दे दी जाए कि अमुक दिन से अमुक दिन तक का समय ठीक नही है, तो व्यक्ति उस समय सावधानी रखकर उस दुर्घटना या रोग के प्रभाव को कम कर सकता है और शरीर को स्वस्थ रखकर अनेकों परेशानियों से बच सकता है।

आपके स्वास्थ्य से सम्बन्धित सभी प्रकार के प्रश्नो के उत्तर जन्मपत्रिका (जन्म समय, तारीख व जन्म स्थान) के आधार पर दिये जाएंगें । साथ ही आपके स्वास्थ्य सम्बन्धित पूरे जीवन की रिपोर्ट भी दी जा सकती है। ज्यादातर पूछे जाने वाले प्रश्न, आपकी सुविधा के लिए दिये जा रहे हैं जैसेः-

क्या मेरे जीवन काल में कोई दुर्घटना है? यदि हां तो कब? (Is there any accident in my life? If yes, when?)

क्या मुझे स्वास्थ्य सम्बन्धित कोई नुकसान है? (Is there any health loss for me?)

क्या मुझे अस्पताल में भर्ती होना होगा? (Will I be hospitalized ?)

मैं बीमारी से कब स्वस्थ हो जाऊंगा? (When I will recover from illness?)

स्वास्थ्य क्षति से बचने के लिए मैं क्या करूं? (What should I do to avoid health loss?)

क्या गर्भ- प्रसव सामान्य होगा? (Will the pregnancy-delivery be normal?)

शल्य-क्रिया के लिए कौन सा समय उपयुक्त रहेगा? (Which period is better for operation?)

आदि।